अंतरा-शब्दशक्ति

अपने सपने

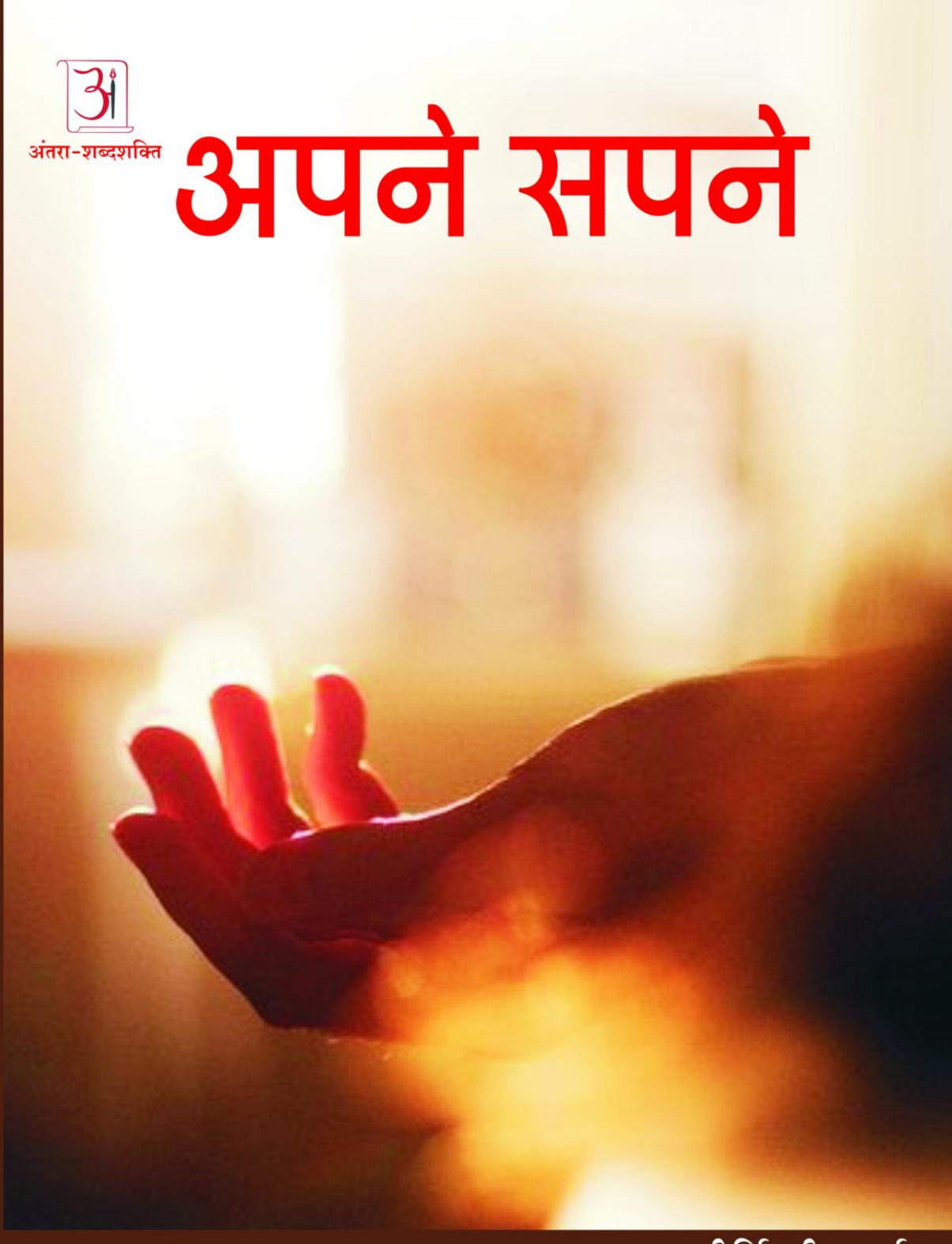

लघुकथा संग्रह

कीर्तिप्रदीप वर्मा

अपने सपने

(लघुकथा संग्रह)

कीर्ति प्रदीप वर्मा

अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन
इंदौर,मध्यप्रदेश

ISBN- 978-93-88102-32-2

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
कार्यालयनेहरु चौक वारासिवनी १५ :,जिला बालाघाट ४८१३३१ (प्र.म)
शाखा२०७-एस :, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर ४५२००१ (.प्र.म)
दूरभाष९४२४७६५२५९ मो २५३१५९-०७६३३ (कार्या) :
अण्डाक -antrashabshakti@gmail.com
अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१८ ©कीर्ति प्रदीप वर्मा
मूल्य: ४०.०० रुपये
आवरण चित्र : संदीप सोनी, वारासिवनी
मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

'APNE SAPNE' by 'KEERTI PRADEEP VERMA'

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है | लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पार्दित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता हैं |प्रस्तृत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं | अत : प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु प्रत्येक लेखक जिम्मेदार हैं| प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र ,भाषाशैली एवं स्थान सभी लखक की कल्पना हैं | किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं हैं|

अपने सपने

आपके समक्ष है जो मैंने जागी आँखों से देखे और आज साकार हुये। राजधानी भोपाल से छोटे से कस्बे बाबई (दादा माखनलाल चतुर्वेदी जी के जन्मस्थान) डोली मेंआई । नौकरी पेशा एकल परिवार से भरे पूरे व्यापारिक परिवार की बडी बहू घूँघट में रह कर चूल्हाचौका , लीपना पोतना, चकिया चलाना और कुँए से पानी खींचने से लेकर कंडे थापने तक लेकर सभी काम सीखे।बिदाई के वक्त माँ की दी सीख "शिकायत का मौका मत देना" पल्लू में गाँठ बांध ली।

आसपास की बहूओं को चारदिवारी में कैद देख कर हॉबी क्लासेस और ब्यूटी पार्लर आरम्भ किया और आकांक्षा संस्था आरम्भ की। गांव की महिलाओं ने भी चौखट पार की, धीरे धीरे जागृति आयी, दोनों बेटियों को (इंजीनियर और सी ए) उनके लक्ष्य तक पहूचाने के बाद अंगुलियां मचल उठीं कलम उठाने को , विवाह से पहले अनेक निबंध प्रतियोगिताओं में राज्यस्तरीय पुरस्कार जीतने वाला दिमाग फिर उसी और दौड़ चला।

परदादी के अवसान पर लिखी श्रद्धांजलि से सभी की तारीफों से हौसला बढ़ा। अनेक पत्र पत्रिकाओं में कविताएं , कहानी, लेख, व्यंग आदि प्रकाशित होने लगे। दूरदर्शन, आकाशवाणी एवं विभिन्न अखिल भारतीय मंचों से काव्य पाठ किया। जो भी विचार आये उन्हें कागज पर उतार दिया।

इस काव्य यात्रा में गुरुजनो द्वारा उचित मार्गदर्शन मुझ छोटी सी कलमकार को मिला। माता पिता के आशीर्वाद के बिना कुछ भी कर पाना असंभव था। इस यात्रा में मेरी सखी एवं प्रेरणा स्रोत डॉ.प्रीति सुराना का भी बहूत योगदान है जिन्होंने **"अंतरा शब्द शक्ति"** समूह बनाया एवं नित्य लिखने के लिए प्रेरित किया। वही बिखरे मोती आज एक माला के रूप में आपके समक्ष हैं। आभारी हूँ **"अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन"** जिन्होंने मेरी पुस्तक का प्रकाशन किया।

पूरी यात्रा मे पतिदेव का हर कदम पर भरपूर सहयोग रहा। जिनके साथ के बगैर कुछ भी कर पाना असंभव था। मेरी प्रत्येक रचना के पहले पाठक एवं समीक्षक वे ही हैं।

समाज से जो पाया उसे लौटाकर जाने की तमन्ना है। "भारत माता" एवं "हिन्दी माता" को विश्व के मानचित्र पर सर्वोच्च शिखर पर देखना चाहती हूँ।
अंत में आप सभी पाठकों की आभारी हूँ, जिन्होंने अपना अमूल्य समय दिया।अपनी राय से अवश्य अवगत कराएं।

कीर्ति प्रदीप वर्मा

माखन नगर ,बाबई म. प्र.

अनुक्रमणिका

1. मजबूर	5
2. शर्त	6
3. चुनौती	7
4. प्रतिक्रिया	8
5. फासला	9
6. आत्मसम्मान	9
7. धरोहर	11
8. अपने सपने	12
9. बदलता मौसम	13
10.वहशी दरिंदा	14
11.संस्कार	16

मजबूर

रात भर से लल्ला बुखार में तप रहा था। जैसे तैसे सुबह आँख लगी थी उसकी।

मन ही मन बुदबुदाती हुई... "अब तो डागदर बाबू के दिखानेई पर है"...

"फीस ओर दवाई के पईसा भी नई हैं"....." और सरकारी अस्पताल दस कोस दूर का करी है"....

इसी उधेड़बुन में कब रोटियां बन गई पता ही न चला । झट रोटी कपड़े में बांध और नशे में धुत पड़े घरवाले के लिए खूंटी से लटका कर , निकल पड़ी, लल्ला को बगल में दबाए ।

साड़ी का झूला बना लल्ला को लिटाया और अनमनी सी लग गई काम पर....। पल पल ठेकेदार बाबू के आने की राह तकती रही ....."आज घड़ी भी इत्ती धीरे चल रई है"..... जैसे तैसे ग्यारह बजे ठेकेदार बाबू की आती हुई गाड़ी में रधिया को रोशनी की एक किरण दिखाई दी।

दौड़ी दौड़ी पहुंची "बाबू हमका छुट्टी दे देई.... और कछु रूपया भी...

ठेकेदार बाबू ने ऊपर से नीचे तक तका...और बड़े ही प्यार से बोले "हां हां क्यों नहीं ?"

"जरूर देंगे "

"आजा कोठी के पीछे वाले कमरे में"

और,....चल पड़ी रधिया.... !!!!

लल्ला की जान जो बचानी थी हर कीमत पर .....

शर्त

आज पूरे घर में खुशी की लहर दौड़ गई थी, जब आकांक्षा में आदित्य के बारे में बताया। तस्वीर देख कर सभी का दिल प्रसन्न हो गया , सुंदर सौम्य चरित्रवान आदित्य सभी के मन भाया।

आकांक्षा के पिताजी ने आदित्य के पिता से बात की , और अगले ही हफ्ते मिलने का समय तय किया गया।

आकांक्षा के माता-पिता खुशी खुशी आदित्य के घर गए। परंतु उनकी खुशियां काफूर हो गईं जब आकांक्षा के पिता ने विवाह से इंकार कर दिया!!!!!

उन्होंने कहा-" आपकी बेटी बहुत अच्छी है" "सर्वगुण संपन्न है "और आप लोग भी अच्छे हैं" परंतु यह विवाह नहीं हो सकता !!!

अकांक्षा के माता-पिता समझ गए शायद उनकी साधारण परिस्थिति देखकर ही वे मना कर रहे हैं!! बेचारे मायूस होकर लौट आये,

आकांक्षा ने सुना तो स्तब्ध रह गई उसने आदित्य के माता-पिता से मिलने की जिद की। वह आदित्य के माता-पिता से मिली ,तब उन्होंने भी बहुत समझाया कि "यह विवाह नहीं हो सकता" पर आकांक्षा अपनी जिद्द पर अड़ी हुई थी।

क्यों नही हो सकता विवाह ? "क्या मेरे माता पिता आपकी मांग की पूर्ति नही कर सकते इसलिए?" -वह अत्यंत दुःखी स्वर में बोली।

तब आदित्य के पिता ने बताया -" बेटा आदित्य की किडनी खराब हो गई है और जल्द ही किडनी ट्रांसप्लांट कराना होगी।

"बस इसी बात को लेकर वे विवाह के लिए मना कर रहे हैं"

फिर क्या था!! आकांक्षा भी अड़ गयी "मुझे हर परिस्थिति में आदित्य का साथ मंजूर है", "सच्चा प्रेम किया है मैंने",...लेकिन मेरी भी एक शर्त है-

आदित्य के माता पिता उसका मुँह देखने लगे ,वे समझ गए कि"यह जरूर कोई लंबी कीमत मांगेगी।"

वह बोली- "मैं अपनी किडनी आदित्य को देना चाहती हूं "और दूसरी बात यह कि "विवाह ऑपरेशन के पहले ही होना चाहिए , ताकि जब आदित्य का ऑपरेशन हो अपने साथी की देखभाल स्वयं कर सकूँ।"

उसकी शर्त सुनकर आदित्य के माता-पिता नतमस्तक थे।

चुनौती

उन्नति बहुत खुश थी आज...बचपन से कुशल धावक बनने का सपना जो देखा था उसने । आज वह राष्ट्रीय चैंपियनशिप के लिए दिल्ली जा रही थी।

अपने छोटे से गांव से सपनों की गठरी सम्हाले उन्नति का मन रेलगाड़ी से भी ज्यादा तेज दौड़ लगा रहा था।

तभी उसने देखा तीन लड़के एक नाबालिग लड़की को छेड़ रहे थे और यात्री तमाशबीन बने हुए थे।

उसका विद्रोही मन चित्कार कर उठा। और वह उन लड़कों को रोकने दौड़ी।

बात बात में बात बढ़ गई और उन लड़कों ने चलती हुई रेलगाड़ी से उसे धक्का दे दिया!! बियाबान जंगल में आधे घंटे तक अपने कटे हुए पैर और बहते हुए खून को देखती रही।

यहां तक की जंगली चूहे पैर को कुतरने लगे!!

सुबह गांव वालों ने बेहोशी हालत में उसे शहर के अस्पताल पहुंचाया जहां उसका ऑपरेशन किया गया। होश आने पर उसे बस एक ही धुन सवार थी किसी भी तरह चेम्पियनशिप जीतना।

अब प्रतियोगिता जीतना उसके लिए एक कठिन चुनौती था ,लेकिन उसने हिम्मत नहीं हारी अपने आत्मविश्वास को संभाले रखा और महीने भर बाद ही धीरे धीरे चलने की प्रेक्टिस कर तीन महीने के अंदर मैं फिर से दौड़ लगाने लगी।

उसकी जिंदगी का सिर्फ और सिर्फ एक ही उद्देश्य किसी भी तरह राष्ट्रीय प्रतियोगिता को जीतना और बापू के कर्ज को चुकाना।

इस बार तो नहीं पर अगली प्रतियोगिता के लिए जी जान से जुट गई और उसने वह कर दिखाया जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती थी.... आज वह राष्ट्रीय चैंपियनशिप का खिताब लेकर गांव लौटी थी.....।

प्रतिक्रिया

बच्चों की जिम्मेदारियों से मुक्त होने के बाद कामिनी ने पुनः कलम उठाई और पन्नों पर फिर पुराने शोक
को पुनर्जीवित किया।

धीरे-धीरे समाचार पत्र पत्रिकाओं में रचनाएं छपने लगी शहर के कवियों के आमंत्रण पर गोष्ठियों में जाना आरंभ किया।

सभी ने बहुत सराहा, धीरे-धीरे प्रशस्ति मिलती गई ,मान सम्मान और शहर से बाहर के मंचो के आमंत्रण मिलने लगे।

साथियों के व्यवहार में बदलाव आना आरंभ हुआ ।

अलगाववादी व्यवहार के साथ-साथ यहां तक कहा गया कि जब आप बड़े-बड़े मंचों पर जाती हैं तो इस छोटी-सी गोष्ठी में क्यों आती हैं!!!

आप हमारी इजाजत के बगैर बाहर नही जा सकतीं ,आदि आदि,...

कामिनी को ऐसे व्यवहार की कतई उम्मीद नहीं थी।

वह बुरी तरह टूट गई, और लिखना बंद करने का मन बना लिया।

उसके पति ने उसका बराबर साथ दिया और समझाया उन लोगों के व्यवहार की प्रतिक्रिया अपना सर्वश्रेष्ठ देकर दो।

कामिनी को बहुत संबल मिला ,बस इसके बाद उसने पीछे मुड़ कर नहीं देखा और साहित्य सेवा निरंतर जारी रखी।

आज भी वह नित नए सोपान चढ़ती जा रही है और रास्ता रोकने वाले वहीं के वहीं ।

फासला

सावन की रिमझिम फुहारों और घुमड़ते बादलों के बीच 'जहाज महल" पर सैलानियों का सैलाब उमड़ पड़ा था।

जिग्ना भी अपने पति के साथ जैसे खो जाना चाहती थी उस नजारे में। रानी रूपमती और बाज बहादुर की प्रेमकथा में न जाने कहां खो गई थी जिग्ना।

तभी दूर मैदान में एक चित्रकार पर निगाह गई ,जो कैनवास पर चित्रकारी बन कर रहा था, और उसके चारों ओर भीड़ लगी थी दर्शकों की। जिज्ञासावश वे भी पहुंच गए चित्रकारी देखने ।

बहुत ही खूबसूरत पेंटिंग थी। जिसको देखो वह दाँतो तले अंगुली दबा रहा था ज्यों ही पेंटर पर निगाह पड़ी!! वह वहीँ जड़ हो गई !! और अतीत के गलियारों में खो गई अरे यह तो हरीश है पाँच वर्ष पहले वे दोनों यहां आए थे अपने चित्रकार समूह के साथ और न जाने कितने सपने संजोए थे।

लेकिन हालात को कुछ और ही मंजूर था और जिग्ना की शादी जिग्नेश से हो गई ।लेकिन हरीश शायद अतीत को भूल नहीं पाया था , उसकी चित्रकारी में अपनी छवि देख वह झट मुड़ी और तेजी से अपने पति के साथ आगे बढ़ गई।

अब हरीश और उसके बीच बहुत लंबा फासला था।

आत्मसम्मान

अचानक फोन की घंटी बजी, नंबर देख कर हैरानी के साथ खुशी का ठिकाना ना रहा!! काँपते हाथों से बटन दबाया और रुंधे गले से बोले -हेलो sss उत्तर में बेटे की आवाज सुन उन्हें अपने कानों पर भरोसा ही नहीं हुआ! फिर भी पिता का दिल था पसीज उठा और कपकपाते होंठों से बोले -

"हाँ बेटा! बोलो"

प्रत्युत्तर में बेटा बोला "हेलो पापा जी"

"मैं आपको लेने आ रहा हूँ!!"

खुशी के मारे गला भर आया कुछ कह भी नहीं पाए

सिर्फ "'हाँ बेटा जरूर।"

बस इतना ही कह पाए और आँखों से अश्रु धारा बह निकली बस झटपट अपना सामान समेटने में लगे

आठ दिनों में बने मित्रों से विदाई लेने लगे। सभी बोले "तुम भाग्यवान हो जो वृद्धाश्रम से कोई तुम्हे वापस ले जाने आया है!! वर्ना यहाँ जो आता है वह अर्थी पर ही जाता है।" उन्हें भी अपनी किस्मत पर नाज होने लगा ।

थोड़े इंतजार के बाद बेटा आया और चरण स्पर्श कर पिता के गले लग गया बोला "हमारे दुर्व्यवहार के कारण आपको यहाँ आना पड़ा। अब हमें अपनी गलतियों का एहसास हो गया है !! आप कृपया कर अपने घर चलें।"

""हाँ बेटा जरूर !" इतना ही कह पाए और बेटे के साथ चले गए ।

घर पर उनका स्वागत सत्कार किया गया और जिन के दबाब मे बेटा उन्हें लेने गया था, वे रिश्तेदार भी मिले । पिता पुत्र अपने-अपने गिले शिकवे भूल कर एक नई शुरुवात करने की बात करते रहे। खुशी खुशी रिश्तेदार अपने-अपने घर चले गए।

अब बात आई पिताजी के घर में रहने की कुछ शर्तों की!!

बेटे ने उन्हें एक सूची थमा दी जिसमें कुछ शर्ते लिखी थी-

*आप टीवी नहीं देखेंगे

*आपको कागज पेन नहीं दिए जाएंगे जिन पर रात दिन उपदेश और भजन लिखा करते हैं ।

*आप दवाओं का इस्तेमाल नहीं करेंगे।

*आप मोहल्ले के लोगों से नहीं मिलेंगे।

* मोबाइल का इस्तेमाल नहीं करेंगे।

*किसी रिश्तेदार से बात नहीं करेंगे ।

*आप सिर्फ अपने कमरे में रहेंगे और वही आपको भोजन दिया जाएगा।

घर की किसी बात में दखलअंदाजी नहीं करेंगे ।

हमारी स्वतंत्रता में दखल नहीं देंगे और न ही आर्थिक मामलों में।

पिताजी ने धैर्यपूर्वक सूची को पढ़ा ,और बेटे से वापस वृद्ध आश्रम में छोड़ आने को कहा, जहाँ वे आत्म सम्मान के साथ रहना चाहते थे,न कि एक बंधुआ की तरह।

धरोहर

बड़ी देर से मां बेटे में बहस छिड़ी थी, दीपावली नजदीक थी, और सभी घर की साफ सफाई में व्यस्त थे। बेटे ने ढेर सारा सामान बाहर आँगन में रख दिया था। देखते ही माँ बिफर उठी !!!

"अरे!! यह क्या किया तूने,यह सब सामान यहाँ क्यों पटक दिया?"

बेटा बोला-" माँ अब इन सब चीजों की क्या आवश्यकता है ?"

"यह कभी काम में भी तो नहीं आती।" बहू ने भी समर्थन किया।

लेकिन, माँ थी कि उन चीजों को फेंकने के लिए तैयार ही नहीं थी!!

बेटा बोला, "माँ हमारे पास सभी आधुनिक उपकरण हैं फिर भी आप यह पुरानी घिसी-पिटी चीजों को क्यों नहीं फेंक नहीं देती।"

माँ की आंखे भर आई!! बोली "बेटा यह जो बांस का सूपा है- तुम्हारी दादी ने मुझे फटकना सिखाया था" दादीऔर मैं इसी से अनाज साफ किया करते थे ,और दादी कहती थी कि बांस की चीजों से वंश वृद्धि होती है।"

"यह जो छोटी सी चकिया है इसमें हम दालें दला करते थे ,और न जाने कितने गीत गाया करते थे।"

"और यह सिलबट्टा जिस पर पिसी चटनी के बगैर तेरे बाबूजी का पेट ही नहीं भरता था।"

माना कि अब इन चीजों की आवश्यकता नहीं पर इन सब से मेरी यादें जुड़ी हुई है, और यह मेरी सासू माँ के हाथों की अनमोल धरोहर हैं ।

माँ की अश्रुधारा बह चली, और बेटा चुपचाप गर्दन झुकाये बाहर चला गया।

अपने सपने

हवाई जहाज की आवाज सुनते ही खाने की थाली छोड़ बाहर भागी उन्नति को माँ ने आवाज लगाई "अरे कहाँ जा रही है खाना तो खा ले",...न जाने ऐसा क्या है रोज हवाई जहाज निकलता है फिर भी देखने भागी फिरती है।"

देखना माँ मैं भी एक दिन हवाई जहाज में उड़ूंगी।

रोज का ही वार्तालाप था माँ बेटी का ।

समय पंख लगा कर उड़ गया और उन्नति बड़े सँयुक्त परिवार की बड़ी बहू बनकर छोटे से कस्बे में आ गई जहाँ कभी घूंघट की आड़ से हवाई जहाज देखने को ही नहीं मिला। भरे पूरे परिवार की कसौटियों पर उतरते उतरते दो बच्चियों की माँ बन गई। लिखने पढ़ने की शौकीन उन्नति को न कभी समय मिला न सुविधा , बस अब उसका पूरा ध्यान बच्चियों को पढ़ाने में था।

बेटियाँ भी शहरों में पढ़ने चली गयीं।तब कुछ समय मिला तो पन्नों पर भाव उतरने लगे और एक दिन पति के कहने पर एक रचना प्रकाशन के लिए भेजी बस फिर जो सफर आरंभ हुआ तो रुका ही नहीं ,आज वह पति के साथ साहित्य यात्रा पर विदेश जा रही थी और हवाई जहाज की सीढ़ियाँ चढ़ते वक्त माँ की डांट याद आ गई जो हमेशा हवाई जहाज देखने पर पड़ा करती थी ।

आज उन्नति का सपना जो पूरा होने जा रहा था।

बदलता मौसम

लक्ष्मीबाई बदहवास सी दौड़ी दौड़ी आयी 'दीदी दीदी' .....'बीना दीदी'.... आपसे मिलने... 'कोई आए हैं,.....'चलिए बाहर मैडम आपको बुला रही है '

बीना सुनते ही सकते में आ गई ...."कौन हो सकता है ?.... छात्रावास में उससे मिलने इतने वर्षो बाद कौन आया होगा!!! अतीत के गलियारों में खो गई..... शादी के पांच वर्ष बाद जब उसके पति अनिल ने झूठे शक के चलते उसे छोड़ दिया था.... और कोख में 2 माह का गर्भ ले वह भाई के घर आ गई थी।

जब भाभी को पता चला कि बीना यहीं रहने वाली है , उनका व्यवहार अचानक बदल गया!!! कुछ दिन तक बीना ने सब कुछ अनदेखा किया , लेकिन उसने अपनी पढ़ाई आगे जारी रखने का फैसला कर शहर के महिला छात्रावास रहने चली गई। वही उसने फूल सी बेटी को जन्म दिया। बिटिया भी सबकी लाडली । पढ़ाई के साथ साथ शिक्षिका की नौकरी की और पी एच डी कर उसी स्कूल में प्रिंसिपल हो गई ,पर उसने छात्रावास नही छोड़ा जो परिवार से भी बढ़ कर था।

"दीदी...क्या सोच रही हो?"

लक्ष्मी बाई की आवाज ने उसकी तंद्रा तोड़ी.... और वह झटपट साड़ी संभाल ऑफिस की ओर चल पड़ी ...कुर्सी पर कोई सज्जन पर बैठे हुए थे। सामने पहुंचकर देखा तो भौचक्की रह गई!!!! यह क्या! यह तो अनिल है!!! हां आंखों पर चश्मा और बालों पर सफेदी झलक रही थी।

मैडम से बात करने की इजाजत ले दोनों छात्रावास के बगीचे की बेंच पर बैठ एक दूसरे के गिले-शिकवे का हिसाब करने लगे। "इतने दिन बाद याद आई"

-बीना बोली

"याद तो मैंने पल पल किया तुम्हे" "मैं बहुत शर्मिंदा हूं अपने किए पर" ....

तुम्हारे सामने आने की हिम्मत ही नहीं जुटा पाया..... और आज रेडियो पर फिर वही गाना सुना जो मैं शादी की हर सालगिरह पर तुम्हे सुनाया करता था..... ' तो बस मैंने तो फैसला कर लिया , और तुम्हारा पता ढूंढते-ढूंढते यहां आ पहुंचा....." तुम्हें लेने आया हूं,...मना मत करना"....

बीना ने कैलेंडर पर निगाह दौड़ाई आज वही तारीख थी... जिस पर अनिल अक्सर गीत गाया करते थे "पल पल दिल के पास तुम रहती हो"..... तभी अचानक जोर की बारिश शुरू हो गई। बीना हैरान थी बदले हुए मौसम को देख कर और खुश भी।

वहशी दरिंदा

श्यामली आज अचानक अपने बचपन की सहपाठी टीना से मिलने आयी। डॉक्टर टीना मरीजों को देख रही थीं ।

अपने केबिन में श्यामली को बैठा कर पलंग पर लेटी एक बारह वर्षीय बालिका के पास गई, जो बहुत ही कमजोर लग रही थी, शायद खून की कमी होगी ।

"क्यों अब तो खून नहीं जा रहा"

"ठीक तो है"

लड़की ने न में गर्दन हिला दी।

"ठीक है, अब आइंदा से ऐसा न हो ध्यान रखना"

नर्स को उसकी देखभाल करने कह कर वह आ गई।

जिज्ञासा वश श्यामली ने पूछा "क्या हुआ इस बच्ची को"

"होगा क्या बस वही एक कहानी , चार माह का गर्भपात किया है रात को।" टीना बोली।

श्यामली की आंखें फटी की फटी रह गई।

"क्या कह रही है तू ?"

"कितनी छोटी बच्ची है।"

"यह हुआ कैसे ?"

"तुमने आवाज भी नहीं उठाई"

"न ही पुलिसमे शिकायत दर्ज कराई"

टीना बोली "शांत हो जा" महिला चिकित्सक होने के नाते हमारा रोज का ही काम है,.. "

"इस तरह के पीड़ितों के लिए शोर नहीं मचाया जा सकता।" टीना बोली

"क्यों आखिर ऐसा क्या हुआ था? उस बच्ची को न्याय मिलना चाहिए"

"जिसने उसके साथ कुकर्म किया उस वहशी दरिंदे को तो सजा मिलनी ही चाहिए।"

"तुम लोगों को भी मनचाहे पैसे मिलते हैं। इस तरह के केसो में।" श्यामली बस कहे जा रही थी..... और टीना सुन रही थी।

"कह लिया सबकुछ अब मेरी सुन"- टीना बोली

"वह जो दीन हीन सी महिला बैठी है, घरों में काम काज कर पेट पालती है।"

इसे लेकर मेरे पास आई थी मेरे पैर पकड़ कर बोली "मेडम जी इलाज कर दो नही तो मैं अपने चारों बच्चों के साथ कुछ खा कर मर जाऊँगी।"

"मुझे भी तेरी तरह गुस्सा आया था और् मैंने भी उन्हें बहुत खरी खोटी सुनाई थी"

उसने बताया जब घरों में काम करने जाती है तब उसके पिता ने बच्ची को धमकाया कि वह हम दोनों को खत्म कर देगा, डर के मारे बेटी ने कुछ बताया नही।

"अब बढ़ा हुआ पेट लेकर कहाँ जाऊं। मैडमजी"

"और बच्चा हो भी गया तो क्या करूँगी?"

"रही बात मेरे मरद की तो उसे सजा दिलवा कर मैं कहाँ जाऊँगी "

"मोहल्ले के दरिंदे घर मे घुसेंगे मैडम जी और बदनामी होगी वह अलग।"

"अब तू ही बता मैं क्या करती।" टीना बोली

समाजसेवी श्यामली निरुत्तर थी- - - -

संस्कार

सुना है, जन्म लेने के लिए मां की कोख भी नसीब नहीं हुई थी, धरती मां ने अपने आंचल में समेटा था तुम्हें।

जनकनंदिनी से राजरानी बनी, महारानी बनने का समय आया, तो वन वन भटकना पड़ा!! सिर्फ अपने ससुर की आज्ञा और पति का साथ देने के लिए!!!

कितने कष्ट उठाए होंगे तुमने !!फिर भी पति और देवर के संग वन में भी खुशी खुशी रहने लगीं किस्मत को यह भी मंजूर न था तो वह राक्षस अपहरण करके ले गया ।

वहां भी स्वयं की रक्षा करते हुए कितने मधुर संबंध बनाए थे तुमने सभी दास-दासियों के साथ, और फिर चौदह वर्षों के बाद एक बार फिर महारानी बनने का सुअवसर आया तो एक छोटी सी बात पर तुम्हें फिर वन जाना पड़ा।

प्रतिकार क्यों नहीं किया तुमने??

माना कि राम मर्यादा में बंधे थे पर तुम भी तो अपनी जगह सही थी फिर क्यों चुपचाप वन को चली गई? वह भी ऐसे समय जब तुम्हारी कोख में रघुकुल के कुलदीपक पल रहे थे ।

वन में भी वन्य जीव जंतु वनस्पति सभी से प्रेम करते हुए दोनों शिशुओं को जन्म दिया और जब पति से मिलन का समय आया तो फिर धरती मां की कोख में समा गई क्यों?

क्यों आखिर क्यों ????

"इतने कष्ट क्यों सहे तुमने"

"तुम तो स्वयं जगत जननी थी"

"फिर क्यों प्रतिकार नहीं किया?"

"शायद यह तुम्हारे संस्कार ही थे जो तुम प्रत्येक नारी को सिखाना चाहती थी।"

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - कीर्ति प्रदीप वर्मा
माता-पिता - श्रीमती रुक्मणि पैगवार - श्री सत्यनारायण पैगवार
पति - श्री प्रदीप वर्मा, बाबई 9406560580
जन्मस्थान - झीलों की नगरी 'भोपाल'
पता - भारतीय स्टेट बैंक के सामने, माखन नगर- बाबई, जिला- होशंगाबाद (म.प्र.)
मो.नं. - 7566948452
ई मेल - keerti1408@gmail.com
शिक्षा - बी.ए.
विधा - छंद, छंदमुक्त, गीत, लघुकथा, लेख, व्यंग्य आदि।
कार्यक्षेत्र - समाज सेवा, पर्यावरण सुरक्षा, वृक्षारोपण, साहित्य सेवा में सक्रिय योगदान जिला मंत्री भा.ज.पा. महिला मोर्चा, जिला होशंगाबाद। संपादकीय सलाहकार 'अंतरा वेब पत्रिका', राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य 'मात्र भाषा उन्नयन संस्थान', संरक्षक माखन नगर युवा मोर्चा, पूर्व तहसील संयोजक (रा.क.संगम), अखिल भारतीय साहित्य परिषद अध्यक्ष (महिला प्रकोष्ठ)होशंगाबाद, प्रभात साहित्य परिषद, ब्राण्ड एम्बेसेडर 'स्वच्छता अभियान'बाबई, अध्यक्ष- ताम्रकार समाज महिला मण्डल, पूर्व अध्यक्ष- आकांक्षा सामाजिक संस्था।
प्रकाशन - 'सृजन समीक्षा' (अंतरा शब्द शक्ति प्रकाशन), 'लौट आओ गौरैया'(पहले पहल प्रकाशन) साहित्य पीडिया वेब पत्रिका में प्रकाशन। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं एवं साझा संकलनों मे कविता, कहानी, लेख, व्यंग्य आदि। विभिन्न अखिल भारतीय मंचों से काव्य पाठ
सम्मान - जिला स्तरीय निबंध प्रतियोगिता में भोपाल जिले का प्रथम पुरस्कार, हिन्दी दिवस निबंध प्रतियोगिता बी.एच.ई. द्वारा निरंतर तीन वर्ष तक प्रथम पुरस्कार, महिला एवं बाल विकास की कला प्रदर्शनी का पुरस्कार, दूरदर्शन एवं आकाशवाणी से वाचन, एवं विभिन्न संस्थाओं द्वारा अनेक सम्मान से सम्मानित।

Women आवाज़ आधी आबादी की गूँज...
www.WomenAawaz.com
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
978-93-88102-32-2
मूल्य 40/-
१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१, संपर्क- ९४२४७६५२५९, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com